अध्याय : 5

मू ल्यां क न

अध्याय : 5

मू ल्यां क न

आधुनिक हिन्दी साहित्य की बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्यिका श्रीमती दिनेश नन्दिनी डालमियाजी का समकालीन हिन्दी कवयित्रीयों में महत्वपूर्ण स्थान है। जिन्होंने अपनी बहुआयामी प्रतिभा का परिचय उपन्यास, कहानी, कविता एवं गद्य गीत की विधा में दिया है। इन सभी क्षेत्रों में उनकी अपनी एक अलग पहचान है। लेकिन दिनेश नन्दिनीजी की मूल चेतना काव्य की ही है और उनके काव्य का व्यक्तित्व ही शीर्ष पर है। दिनेश नन्दिनीजी मूलतः प्रणय परक भावना की कवयित्री है, किन्तु उनकी कल्पना लौकिक धरातल से चलकर आध्यात्मिक भूमि का सहज ही स्पर्श कर लेती हैं, जो छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति रही है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध में मुख्य रूप से दिनेश नन्दिनीजी के "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह का सृजनात्मक मूल्यांकन किया है। इस तरह सुविधा नुसार इसे पाँच अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय में दिनेश नन्दिनीजी के जन्म, जन्मस्थान, पारिवारिक परिचय, शिक्षा, व्यक्तित्व के विविध पहलू तथा उनके सम्यक् कृतित्व का संक्षिप्त परिचय दिया है।

दिनेश नन्दिनी का जन्म एक सामान्य मध्यवर्गीय परिवार में हुआ और उनके व्यक्तित्व के मूल संस्कार भी उसके अनुरूप ही हैं। दिनेश नन्दिनीजी के पिता एक सुशिक्षित प्राध्यापक थे और इसलिए उनकी स्वाभाविक इच्छा थी कि उनकी बेटी की शिक्षा भी सुव्यवस्थित हो। उस युग में सामाजिक स्थिति कुछ इसप्रकार

थी कि प्रायः लड़कियों को स्कूल में पढ़ने के लिए नहीं भेजा जाता था, अतः इनकी भी दसवीं तक की शिक्षा अव्यवस्थित ही रही इनके पढ़ाई का प्रबन्ध घर पर ही किया गया। लेकिन जब इनके पिता की नियुक्ति नागपुर के एक कॉलेज में हो गयी तब इनका पूरा परिवार वहीं जाने के बाद दिनेश नन्दिनी ने वहीं पर मैट्रिक की परीक्षा पास की और फिर एम्·ए·पास किया। दिनेश नन्दिनी ने अपनी तेरह वर्ष की आयु से ही साहित्य यात्रा का आरम्भ कर दिया। उनकी इस नैसर्गिक प्रतिभा को उनके पिता समझ गये थे और समय समय पर उपयुक्त मार्गदर्शन कर उन्हें सुन्दर से सुन्दर तर और अधिक से अधिक लिखने के लिए प्रोत्साहित करते रहते थे।

स्वभाव विशेष के दृष्टि से दिनेश नन्दिनी में लेखिका के साथ-साथ मित्र रूप भी दिखायी देता है, स्नेहभावी स्वभाव के कारण वे हर एक व्यक्ति के साथ अपना मित्र रूप सम्बन्ध रखती है। इसतरह विभिन्न रूचियाँ उनके व्यक्तित्व की दीप्त वर्तिकाएँ हैं। माथे पर एक बड़ी सी गोल बिन्दी, मांग में सिन्दूर और हाथों में साडी से मेल खाती हुई ढेर सारी चूडियाँ पहने उनका श्यामल वर्णी किन्तु आकर्षक एवं सौम्य व्यक्तित्व देखने वाले को उनकी ओर आकर्षित करता है। उनके व्यक्तित्व के निर्माण में उनके जीवन में घटित विविध महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रभाव का विश्लेषण करें तो इस दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है - सेठजी से उनका विवाह। सेठ रामकृष्ण डालमिया से उनका विवाह हो गया। उन दिनों सेठ रामकृष्ण डालमिया अपने देश के विभिन्न व्यापारिक आर्थिक और राजनैतिक गतिविधियों के प्रमुख आकर्षण केन्द्र थे। उस समय तक सेठजी के पाँच विवाह हो चुके थे। आयु की दृष्टि से भी वे दिनेश नन्दिनी से लगभग 22-23 वर्ष बड़े थे। दोनों परिवारों के आर्थिक स्थिति में भी जमीन-आसमान का अन्तर था और इस विवाह के बाद दिनेश नन्दिनी का जीवन घर की चार दीवारी में व्यतीत होने के कारण इनके स्वभाव में संकोच एवं लज्जाशिलता बहुत है।

वस्तुतः यही संकोच और लज्जाशीलता के कारण ही उनके साहित्य में वैयक्तिक अनुभूतियों का ही चित्रण अधिक हुआ है, सामाजिक का नहीं। विवाहोपरान्त

भी दिनेश नन्दिनी ने अपने आपको अकेला ही महसूस किया और इसलिए उन्होंने अपना मन साहित्य रचना में ही अधिक लगाया - उसी में उन्हें जीवन की सार्थकता भी लगती थी। इनके साहित्य में सामाजिकता के अभाव का एक कारण यह भी है कि इनमें "अकेलेपन" की अनुमति इस सीमा तक है कि अनेक लोगों के बीच में बैठे हुए भी वे अपने में डूबी रहती है, उनके व्यक्तित्व का यह विरोधाभास उनकी एक निजी विशिष्टता है। दिनेश नन्दिनीजी के स्वभाव की एक उल्लेखनीय विशिष्टता यह भी है कि वे "धर्म" की अपेक्षा "कर्म" को अधिक महत्व देती है। किसी भी प्रकार के सामाजिक और धार्मिक बन्धन उन्हें स्वीकार्य नहीं हैं।

दिनेश नन्दिनी की काव्य यात्रा प्रारम्भ में एक गीतकार के रूप में रही और फिर गद्य-गीतों से प्रेरित होकर गीत लिखने आरम्भ कर दिए। दिनेश नन्दिनी की रचनाओं में छायावादी भावों का एक सहज प्रवाह है। उनके "उरवाती", "मनुहार", "सारंग" कविता संग्रहों में यद्यपि व्यक्तिगत प्रणय सम्बन्धी भावनाओं का समावेश है, किन्तु उनके भावों में सरलता है, प्रियतम के मिलन के प्रति कहीं अटूट लगन है वही एक अनुरक्ति और दार्शनिक विरक्ति का भाव ही सहसा उनकी कविताओं में दिखायी देता है। इस तरह उनका 1991 में प्रकाशित कविता संग्रह - "हिरण्यगर्भा" है जिसका सृजनात्मक मूल्यांकन करने का प्रयत्न मैंने अपने शोध-प्रबंध में किया है। "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह एक सृजन का सत्य है जिसमें सृजन-प्रक्रिया की मर्मान्तिक पीडा है, जिसकी विशालता को कवयित्री ने "महाकाव्य की पीडा" का नाम दिया है। इस कविताओं में दिनेश नन्दिनी को प्रेम-सम्बन्ध में मिली निराशा और विवाह के बाद प्रेम की प्राप्ति में असफलता मिलने का वर्णन है। इसतरह "हिरण्यगर्भा" की कविता में उनके अतीत के स्मृति बिम्ब प्रकट हुए हैं। साथ ही उनके "हिरण्यगर्भा" काव्य कृति का मूल्यांकन करते हुए उनकी अन्य रचना-विधाओं में व्यक्त विचारों को भी परखना आवश्यक महसूस हुआ। अतः उन सभी विधाओं - गद्यगीत, काव्यसंग्रह, उपन्यास, कहानी का संक्षिप्त परिचय दिया है। उनकी अन्य विधाओं में भी उनकी वैयक्तिक अनुभूति, निराशा और अतृप्त प्रेम की भावना का ही चित्रण है। वही उनकी सतत साहित्य-साधना का मूल है और सर्वत्र परिव्याप्त भी।

द्वितीय अध्याय में दिनेश नन्दिनीजी के "हिरण्यगर्भा" कविताओं का सामान्य परिचय स्पष्ट किया है, जो उनके काव्य-रूप में प्रवाहित हैं। इस अध्याय में कवयित्री की आत्मपीडा, विवशता, अतृप्तता, अन्तर्द्वन्द स्पष्ट हुआ है। उनकी कविताओं में नारी मन का अन्तर्द्वन्द प्रमुख है और उसके साथ एक विशेष वर्ग के जीवन परिवेश का भी अत्यन्त प्रामाणिक और प्रभावी चित्रण स्पष्ट है। दिनेश नन्दिनी ने इस कविताओं के द्वारा अपने प्रेमजीवन को स्पष्ट किया है और वैवाहिक जीवन की विडम्बना को प्रस्तुत किया है। उसी तरह विरह वेदना, विफल प्रेम, नश्वरता का एहसास, घुटन, बंध-मुक्ति का प्रयास, अपेक्षाभंग, संयोग का प्रतिकात्मक वर्णन, पश्चाताप आदि अनेक विषयों का चित्रण उनकी कविता में है, जो उन्हें वैवाहिक जीवन की विडम्बना से मिले हैं।

कवयित्री दिनेश नन्दिनी ने सामायिक समस्याओं और विवादों के झमेले में न पड-कर केवल अपने मनोभावों की अभिव्यक्ति को ही अंकित किया है। कवयित्री का जीवन एक महान खोज में लीन है, प्रतिक्षण किसी अप्राप्य वस्तु में लीन रहकर वे अन्त में अपनी असफलताओं को सफलता में परिणत कर लेती है। इसलिए उनके गीत घोर निराशा की पृष्ठभूमि में पनप कर भी आशा की अस्फूट रेखा से निखर पडे हैं। गीतों का आधार निश्चय ही लौकिक है, परन्तु कवयित्री का सतत काव्य-साधना और गहन जीवन अनुभूति के कारण वह लौकिकता बहुत ऊँचे स्तर तक पहुँच गई है। यही नन्दिनीजी की कविताओं का सौन्दर्य है। दिनेश नन्दिनीजी ने प्रणय की पिपासा को पीकर जैसे-तैसे अपने जीवित रहने की कहानी दुहराई है। वह अपने भौतिक शरीर रूपी कारागार में अपने आत्मीक बन्धन से विव्हल हो उठती है और यही भाव उनके काव्य में प्रकट होते हैं। इस तरह दिनेश नन्दिनी के भावों का प्रस्फुटन प्रकृति को साथ लेकर यदि कहीं हुआ है तो वहाँ मनःस्थिति का साम्य देखा जा सकता है।

इसीतरह उनके गीतों का साहित्यिक विश्लेषण देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि महादेवी के समान उन्होने भी दुःख को अपने जीवन का साथी स्वीकार किया है, तथा सुख से दूर हटकर दुःख मे ही विचरण करना उन्हें अधिक भाता

है। और यही निराशा और अतृप्त प्रेम की भावना ही उनके "हिरण्यगर्भा" काव्य का सामान्य परिचय है, जो इस अध्याय में चित्रित है। उपुर्यक्त विवेचन उसका सार मात्र है।

तृतीय अध्याय में दिनेश नन्दिनी के "हिरण्यगर्भा" काव्य में कथ्यचेतना का विचार किया है। दिनेश नन्दिनी प्रमुखतः प्रणय परक भावना की कवयित्री होने के कारण, उनकी कल्पना लौकिक धरातल से चलकर आध्यात्मिक भूमि को सहज ही स्पर्श कर लेती है, जो छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्ति रही है। इस तरह उनके काव्य में एक ओर तो दार्शनिक प्रवृत्ति का सहज आगमन है, तथा दूसरी ओर सहज अभिव्यक्ति के साथ सूक्ष्म-दृष्टि से सम्पन्न चित्रात्मकता की प्रवृत्ति देखने को अनायास ही मिल जाती है। हिरण्यगर्भा के समस्त काव्य में जो प्रमुख प्रवृत्तियाँ उभरी हैं वे उनकी व्यक्तिवादिता, प्रणयानुभूति, सौन्दर्यानुभूति, वेदनानुभूति, सत्यान्वेषण, आस्था आदि भावनाओं से सम्बन्धित हैं।

चतुर्थ अध्याय में "हिरण्यगर्भा" के शिल्प विधान को सम्यक् रूप से आकलित किया है। दिनेश नन्दिनी का "हिरण्यगर्भा" काव्यसंग्रह शिल्प के दृष्टि से कुछ स्थलों पर अवश्य चमत्कार पूर्ण दिखाई देता है, किन्तु वह चमत्कार कवि-चतुष्ट्य के समान स्वाभाविक ही दिखायी देता है। दिनेश नन्दिनी ने जानबूझकर किसी भी स्थल पर चमत्कार उत्पन्न नहीं किया। भाषा की दृष्टि से एक ओर तो ऐसी कोमल कान्त पदावली का प्रयोग किया है जो कवयित्री के हृदयगत सूक्ष्म भावों को वहन करने में समर्थ हुई, तथा दूसरी ओर ऐसी पदावली भी अपनाई जिससे जन-मानस की सम्वेदना को अपने में समाहित कर लिया।

इनकी लाक्षणिक और व्यंजनात्मक पदावली के अन्तर्गत सूक्ष्म भावों का स्पन्दन और वैयक्तिक अनुभूति का स्वर सहज ही प्रकट हुआ है। इस तरह चित्रात्मक प्रवृत्ति के अनुसार शब्दों की ध्वनि नवीन सन्दर्भों के नवीन अर्थों की खोजती हुई सूक्ष्म विषय को मूर्तिमान बनाने में समर्थ हैं, कवयित्री के इसी प्रवृत्ति में उनकी विषयानुरूप सूक्ष्म भावों का "बिम्ब विधान" और "प्रतीक" विधान पूरी तरह सहायक सिध्द हुआ है। दिनेश नन्दिनी के काव्य में बिम्ब विधान के अन्तर्गत-गत्यात्मक

बिम्ब, ध्वनि, भाव, करूण, उत्साह, भयानक, दृश्य, स्पर्श बिम्ब, आदि बिम्बों का सजीव अंकन हुआ है। प्रतिकों की दृष्टि से दिनेश नन्दिनी ने कही स्वच्छन्द प्रकृति के अनुसार और कहीं परम्परागत रूचि के अनुसार भिन्न-भिन्न क्षेत्रों से प्रतिकों को ग्रहण किया है कि जिसमें उनकी आन्तरिक चेतना को सजाकर और सँवार कर प्रस्तुत किया है। प्रतिकों के माध्यम से दिनेश नन्दिनी ने अपनी वैयक्तिक अनुभूति, विरह प्रेम, वैवाहिक जीवन की विडम्बना, पश्चाताप इत्यादि मनोवृत्तियों का सृजनात्मक चित्रण नवीन साहित्यिक धारा के अनुरूप किया है।

"अलंकार विधान" की दृष्टि से दिनेश नन्दिनीजी काव्य अलंकारिक भी हैं और अनेक पुरातन अलंकारों में नवीन संदर्भों की अभिव्यक्ति भी है। यहाँ तक कि मानवीकरण, विशेषण, विपर्यय, तथा ध्वन्यर्थ व्यंजना में भी कवयित्री ने अपनी सहज प्रवृत्ति का प्रस्तुतिकरण किया है। इस तरह इन नवीन अलंकारों का प्रयोग दिनेश नन्दिनी की स्वच्छन्द प्रकृति और काव्यात्मक सौन्दर्य तथा रस को ही व्यक्त करती है।

दिनेश नन्दिनी ने काव्य-रूप की दृष्टि से प्रगीत-मुक्तक को ही अपनी अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया है। दिनेश नन्दिनी ने आत्माभिव्यक्ति के आधार पर भिन्न-भिन्न विषयों का चयन कर अपनी अन्तश्चेतना के भावों का ऐसा गुंफन किया कि, जिससे गीति-काव्य के सृजन की दृष्टि से दिनेश नन्दिनी आधुनिक हिन्दी गीति-काव्य की परम्परा में विशिष्ट स्थान पाने की अधिकारिणी हैं।

समग्रतः कहा जा सकता है कि दिनेश नन्दिनीजी का अपने "हिरण्यगर्भा" काव्यों में "नारी मन का अन्तर्दन्द" तो प्रमुख है, किन्तु उसके साथ एक विशेष वर्ग के जीवन-परिवेश का भी अत्यन्त प्रामाणिक और प्रभावी चित्रण है। और इस तरह प्रमुखतः अतीत के स्मृति-बिम्बों को इन कविताओं में संजो कर रखा है जिसमें दिनेश नन्दिनीजी के भावों के साथ सम्बद्ध मनःस्थितियाँ हैं, जो उनके उद्रेक की आधारभूत भूमि है।